Name of candidate : **Aruna Chaudhary**

Name of Supervisor : **Dr. Anil Kumar**

Department of Hindi

390/22/4116

Title: HINDI KI JANVADI KAHANI MEIN VYAKT VAICHARIK SAROKARO KA ADHAYAYAN

ABSTRACT

प्रस्तुत शोध प्रबंध में हिन्दी की जनवादी कहानी में व्यक्त वैचारिक सरोकारों का निम्न अध्यायों में विभाजित करके अध्ययन किया गया है।

प्रथम अध्याय है "जनवाद और जनवादी कहानी" : इस अध्याय में मैंने जनवाद का तात्पर्य स्पष्ट करने का प्रयास किया है। जनवाद की धारणा व्यापक है। यह मात्र मार्क्सवादी विचारधारा का पोषक नहीं है। इसमें राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक जीवन के विविध पहलुओं का समावेश होता है। जनवाद में जनतांत्रिक मूल्यों की रक्षा का प्रश्न महत्वपूर्ण होता है। यह किसान मजदूरों की चिंता से आगे ले जाकर उन सारे लोगों को अपनी चिंता के केन्द्र में ले आता है जो सामाजिक स्थिति में बदलाव की आकांक्षा से प्रेरित होकर प्रतिगामिता और यथा स्थितिवाद के विरोध में सक्रिय है।

नई कहानी आन्दोलन के बाद हिन्दी कहानी का दूसरा सबसे बड़ा बदलाव सातवें दशक से प्रारम्भ होता है जब अकहानी, एण्टी कहानी, सचेतन कहानी आदि के धूल–धूएं को झटक कर हिन्दी कहानी ने फिर से प्रेमचन्द की यथार्थवादी कथा परम्परा से जुड़ने की कोशिश की और इस कोशिश में जनवादी कहानी ने जन्म लिया। प्रगतिशील लेखक आन्दोलन एक बार फिर सक्रिय हुआ और वाम, ओर, पहल, क्यों, कथा, कथा प्रमिान, सम्बोधन, सम्प्रेषण, विचार अभिव्यक्ति, उत्तरार्द्ध और उत्तरगाथा जैसी लघु पत्रिकाओं ने समूचे हिन्दी प्रदेश में ऊर्जा और उत्साह का ज्वार पैदा कर दिया।

द्वितीय अध्याय है "जनवादी कहानीः युगीन परिस्थितियाँ" प्रस्तुत अध्याय में जनवादी कहानी की राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक एवं साहित्यिक परिस्थितियों का गहन विश्लेषण किया गया है।

तृतीय अध्याय है "जनवादी : राजनीतिक सरोकार" इस अध्याय में राजनीतिक सरोकारों के अन्तर्गत जनवादी कहानी में स्वतंत्रता के बाद राजनीति के विकृत रूप का उदघाटन किया गया है। जनवादी कहानीकार विकृत राजनीति तथा व्यवस्था के अन्याय एवं शोषण का विरोध करते हुए जनाधिकारों के लिए संघर्ष करते हैं।

चतुर्थ अध्याय है ''जनवादी कहानी'' आर्थिक सरोकार'' इस अध्याय में आम आदमी की गरीबी, उसका अर्थाभाव, उसकी दरिद्रता, जहालत, बेबसी का मार्मिक विश्लेषण करते हुए पूंजीवादी व्यवस्था के शोषक रूप का उदघाटन किया गया है। जनवादी कथाकारों ने अपनी रचनाओं के माध्यम से आर्थिक असमानता की तीव्र भर्त्सना करते हुए परस्पर सहयोग और उचित पारिश्रमिक देने की वकालत की है ताकि समाज में बराबरी और भाईचारे की स्थिति बन सके।

पंचम अध्याय ''जनवादी कहानीः सामाजिक सांस्कृतिक सरोकार'' प्रस्तुत अध्याय में जनवादी कहानी सामंती मूल्यों पर किस प्रकार चोट करती है उसका विश्लेषण किया गया है। सामंती मूल्य जातिवाद, अंधविश्वास, रूढिवादिता, साम्प्रदायिक्ता आदि किसी न किसी रूप में समाज को नुकसान ही पहुंचा रहे थे।

जनवादी कहानी किस प्रकार मजदूरों और किसानों का पक्ष लेती है उसका विश्लेषण किया गया है। इसराइल की 'फर्क', विजयकांत की 'बीच का समर' आदि कहानियाँ भूमिहीन किसानों, खेतिहर मजदूरों की स्थिति, उनके संघर्ष को दर्शाती है। असगर वजाहत की 'ऊसर में बबूल', 'दिल्ली पहुंचना है' मधुकर सिंह की 'हरिजन सेवक', विजयकांत की 'बह्मफांस' सृंजय की 'कामरेड का कोट', आदि कहानियों में किसानों, मजदूरों में अपने अधिकारों के प्रति आई सजगता को दर्शाया गया है। जनवादी कहानी दलितों के मुद्दे पर अत्यंत मुखर होती है। वर्ण व्यवस्था, जाति व्यवस्था में शोषित दलित, उत्पीडित समुदाय में राजनीतक, सामाजिक चेतना के आने और प्रतिशोध के स्वरों का दर्ज करती हैं। इसी प्रकार जनवादी कहानी आदिवासी अस्मिताओं के विस्थापन की पीड़ा को भी वाणी देती है।

जनवादी कहानी स्त्री मुक्ति पर भी बल देती है। स्त्री की स्वतंत्रता और अधिकार की मांग को नमिता सिंह और सुधा अरोड़ा ने अपनी कहानियों में उठाया है। जनवादी कथाकार एक वर्गहीन समाज की कल्पना करते हैं। जिसमें किसी प्रकार का भेदभाव न हो इसलिए वे आर्थिक समस्याओं, सामाजिक कुरीतियों, राजनीतक अव्यवस्थाओं की ओर लोगों का ध्यान आकर्षित करते हुए जनशक्ति को एक जुट होकर योजनाबद्ध ढंग से संघर्ष के लिए प्रेरित करते हैं।

निष्कर्ष : जनवादी कहानी वृहतर सामाजिकता का अविच्छिन्न अंग बनकर सामने आई है। जनवादी कहानी में राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक टकरावों को स्पष्टता से देखा जा सकता है। इन सभी मुद्दों पर जनवादी काहनी प्रभावशाली ढंग से हस्तक्षेप करती है जिससे उसके वैचारिक सरोकारों का पता चलता है। जनवादी कहानी का वैचारिक सरोकार पराजय बोध का नही है, अपितु उसमें उत्कट जिजीविषाहै। इसके तल में प्रेमचन्द की स्वस्थ विचारधारा है।